❍ 28 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗ज्ञान योग से सबकी पालना की ?∗

➢➢ ∗बुधी को शुद्ध बनाने की भोजन की परहेज़ रखी ?∗

➢➢ ∗सवा परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन के निमित बने ?∗

➢➢ ∗सर्व शक्तियों की लाइट सदा साथ रही ?∗

────────────────────────

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

〰✧ ∗आप क्षमा के सागर के बच्चे हो तो परवश आत्माओं को क्षमा दे दो।∗ अपनी शुभ वृत्ति से ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो ∗कोई भी आपके सामने आये वह कुछ न कुछ स्नेह ले, सहयोग ले, क्षमा का अनुभव करे, हिम्मत का उमंग-उत्साह का अनुभव करे।∗

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⁺˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚

⁺˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

⁺˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚

✺ *"मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ"*

〰✧ सभी अपने को डबल लाइट अर्थात् फरिश्ता समझते हो? *फरिश्ते की विशेष निशानी है-फरिश्ता अर्थात् न्यारा और बाप का प्यारा, पुरानी दुनिया और पुरानी देह से लगाव का रिश्ता नहीं। देह से आत्मा का रिश्ता तो है, लेकिन लगाव का संबंध नहीं। एक है 'संबंध' और दूसरा है 'बंधन'। एक है कर्म-बन्धन और दूसरा है कर्म-सम्बन्ध।* तो संबंध तो रहना ही है। जब तक कर्मेन्द्रियां हैं तो कर्म का संबंध तो रहेगा लेकिन बंधन नहीं हो। बंधन की निशानी है-जिसके बंधन में जो रहता है उसके वश रहता है। जो संबंध में रहता है वह स्वतन्त्र रहता है, वश नहीं होता। कर्मेन्द्रियों से कर्म के संबंध में आना अलग बात है लेकिन कर्मबन्धन में नहीं आना।

〰✧ फरिश्ता अर्थात् कर्म करते भी कर्म के बंधन से मुक्त। ऐसे नहीं कि आज आंख कहे कि यह करना ही है, देखना ही है-तो वश होकर के देख लें। जैसे कोई जेल में बंधन में होता है, तो जेलर जैसे चाहे उसको बिठायेगा, चलायेगा, खिलायेगा। तो बंधन में होगा ना! वो चाहे मैं जेल से चला जाऊं, तो जा सकता है? बंधन है ना। ऐसे पुराने शरीर का बंधन न हो, सिर्फ सेवा प्रति संबंध हो। ऐसी अवस्था है? या कभी बंधन, कभी संबंध? बंधन बार-बार नीचे ले आयेगा। *तो फरिश्ता अर्थात् बंधनमुक्त। ऐसे नहीं-कोशिश करेंगे। 'कोशिश' शब्द ही सिद्ध करता है कि पुरानी दुनिया की कशिश है। 'कोशिश' शब्द नहीं। करना ही है, होना ही है। 'है'-'है' उड़ा देगा, 'गे'-'गे' नीचे ले आयेगा। तो 'कोशिश' शब्द

समाप्त करो।*

~~✧ *फरिश्ता अर्थात् जीवन्मुक्त, जीवन-बंधन नहीं। न देह का बंधन, न देह के संबंध का बंधन, न देह के पदार्थ का बंधन। ऐसे जीवन्मुक्त हो? अव्यक्त वर्ष का अर्थ ही है फरिश्ता स्थिति में स्थित रहना।* चेक करो कि कौनसा लगाव नीचे ले आता है? अपनी देह का लगाव खत्म किया तो संबंध और पदार्थ के लगाव आपे ही खत्म हो जायेंगे। अपनी देह का लगाव अगर है तो संबंध और पदार्थ का लगाव भी अवश्य ही खींचेगा। इसलिए पहला पाठ पढ़ाते हो कि- देह-भान को छोड़ो, तुम देह नही, आत्मा हो।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

~~✧ *सारे विस्तार को बीज में समा दिया है वा अभी भी विस्तार है?* इस जडजड़ीभूत वृक्ष की किसी भी प्रकार की शाखा रह तो नहीं गई है? *संगमयुग है ही पुराने वृक्ष की समाप्ति का युग।* तो हे संगमयुगी ब्राह्मणों! पुराने वृक्ष को समाप्त किया है? जैसे पते-पते को पानी नहीं दे सकते। बीज को देना अर्थात सभी पत्तों को पानी मिलना। ऐसे इतने *84 जन्मों के भिन्न-भिन्न प्रकार के हिसाब-किताब का वृक्ष समाप्त करना है।*
एक-एक शाखा को समाप्त करने का नहीं।

~~✧ आज देह के स्मृति की शाखा को समाप्त करो और कल देह के सम्बन्धों की शाखा को समाप्त करो, ऐसे एक-एक शाखा को समाप्त करने से समाप्ति नहीं होगी। लेकिन *बीज बाप से लगन लगाकर, लगन की अग्नि द्वारा सहज समाप्ति हो जायेगी।* काटना भी नहीं है लेकिन भस्म करना है। आज काटेंगे, कुछ समय के बाद फिर प्रकट हो जायेगा क्योंकि वायुमण्डल के द्वारा वृक्ष को नेचुरल पानी मिलता रहता है। जब वृक्ष बडा हो जाता है तो विशेष पानी देने की आवश्यकता नहीं होती।

~~✧ नैचरल वायुमण्डल से वृक्ष बढ़ता ही रहता है वा खडा हुआ रहता है तो इस विस्तार को पाये हुए जडजडीभूत वृक्ष को अभी पानी देने की आवश्यकता नहीं है। यह आटोमैटिक बढ़ता जाता है। *आप समझते हो कि पुरुषार्थ द्वारा आज से देह सम्बन्ध की स्मृति रूपी शाखा को खत्म कर दिया, लेकिन बिना भस्म किये हुए फिर से शाखा निकल आती है।* फिर स्वयं ही स्वयं से कहते हो वा बाप के आगे कहते हो कि यह तो हमने समाप्त कर दिया था फिर कैसे आ गया! पहले तो था नहीं फिर कैसे हुआ। कारण? *काटा, लेकिन भस्म नहीं किया।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

~~✧ भाग्य विधाता बाप सभी बच्चों को भाग्य बनाने की अति सहज विधि

बता रहे हैं। *सिर्फ बिन्दु के हिसाब को जानो। बिन्दु का हिसाब सबसे सहज है। बिन्दु के महत्व को जाना और महान बने।* सबसे सहज और महत्वशाली बिन्दु का हिसाब सभी अच्छी तरह से जान गये हो ना! बिन्दु कहना और बिन्दु बनना। बिन्दु बन बिन्दु बाप को याद करना है। *बिन्दु थे और अब बिन्दु स्थिति में स्थित हो बिन्दु बाप समान बन मिलन मनाना है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

───────────────────────

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पढ़ाई में अथक बनकर, कर्मातीत अवस्था को पाना"*

➳ _ ➳ मीठे से मधुबन की मीठी प्यारी कुटिया में... मै तेजस्वी आत्मा अपने दिलबर बाबा से रुहरिहानं कर रही हूँ... प्यारे बाबा मुझ आत्मा की भावनाओ को सुनने के लिए बेहद उत्सुक है... अपनी रूहानी दृष्टि और शक्तियो से मुझे भरपूर कर रहे है... मै आत्मा बाबा की किरणों के साये तले असीम सुख पाती जा रही हूँ... और दिल ही दिल में यह गीत गुनगुना रही हूँ... *आ बेठ मेरे पास बाबा तुझे देखती रहूँ...न तु कुछ कहे ना मै कुछ कहूँ..*..मीठे बाबा भी मुस्कराते हुए... अपनी बाँहों को फैलाये मुझ आत्मा को अपने प्यार में सराबोर कर रहे है...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को बेपनाह अमीरी का मालिक बनाते हुए बोले :- * "मीठे प्यारे फल बच्चे... ईश्वरीय पढाई में सदा अथक बनना है... जितनी

दिल से पढ़ाई पढ़ेंगे, उतनी ही प्राप्ति के हकदार बनेगे... *यह पढ़ाई ही काँटों को फूलो जैसा सुंदर बनाकर स्वर्ग का राज्य भाग्य दिलायेगी.*.. इसलिए इस कमाई में सदा अथक बन, कर्मातीत अवस्था को पाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की सारी खानों और खजानो को अपनी बुद्धि में समेटकर कह रही हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा... देह के नशे में कंगाल हो गयी मुझ आत्मा को... अमीरी से सजाने परमधाम से उतर आये हो... मेरे भाग्य को ज्ञान रत्नों से चमकाने धरा पर आये हो... *भगवान से मेरे बाबा बनकर वरदानों की बौछार कर रहे हो..*. प्यारे बाबा आप संग संगम में ऐसे सुंदर जीवन को जीयूँगी...यह तो कभी सोचा ही नही था..."

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को अपनी गोंद में ज्ञानामृत पिलाते हुए बोले :-* "प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता के साये में अमूल्य ज्ञान रत्नों को अपनी बाँहों में भरकर... *अतुल धनसंपदा के मालिक बन कर, सुखो की धरती पर मुस्कराओ.*.. सच्ची लगन से ईश्वरीय पढ़ाई पढ़कर सम्पूर्णता को पा लो... और बेहद के समझदार बनकर, कर्मातीत हो जाओ...."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने प्यारे भगवान को ज्ञान दौलत मुझ पर लुटाते देख कह रही हूँ ;-* "प्यारे बाबा आपके ज्ञान रत्नों को पाकर तो मै आत्मा भाग्य की धनी हो गयी हूँ... बेहद की समझ पाकर विकर्मो से परे हो, दिव्यता भरा खुबसूरत जीवन जी रही हूँ... *संगम पर भी मौज मना रही हूँ और भविष्य को देवताओ सा सुंदर बनाती जा रही हूँ.*.."

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को अनमोल खजाने से सम्पन्न बनाते हुए बोले :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... देह और देह के भान में खपकर दुखो के जंगल में लहुलहानं हो गए हो... *अब श्रीमत के हाथ को पकड़कर, सुखो की बगिया में खुबसूरत गुलाब बनकर खिल जाओ.*.. ईश्वरीय पढ़ाई पढ़कर 21 जनमो की राजाई अपने दामन में सजा लो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से ज्ञान रत्नों की दौलत को अपनी सम्पत्ति बनाते हुए कह रही हूँ :-* "मेरे सच्चे साथी बाबा... मै आत्मा आपकी फलो सी

गोंद में कितनी प्यारी फूलो सी खिल रही हूँ... रूहानियत से भरपूर होकर दिव्यता से छलक रही हूँ... *भगवान को यूँ शिक्षक रूप में पाकर... सच्चे ज्ञान की झनकार से दुखो के जंगल से बाहर निकल गयी हूँ.*.." अपने बाबा से अथाह दौलत अपनी बाँहों में समेटकर मै आत्मा अपने कर्म क्षेत्र पर आ गयी....

————————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- मात पिता को फॉलो करते हुए ज्ञान योग से सबकी पालना करनी है*"

➳ _ ➳ मम्मा बाबा ने शिव बाबा की श्रेष्ठ मत पर चल कर जो श्रेष्ठ कर्म किये उन श्रेष्ठ कर्मो का एक एक यादगार उनकी कर्मभूमि मधुबन में स्पष्ट दिखाई देता है। इसलिए मम्मा बाबा को फॉलो करने का दृढ़ संकल्प लेते ही मन बुद्धि सहज ही परमात्मा की उस अवतरण भूमि मधुबन में पहुंच जाते हैं और मम्मा बाबा की साकार यादें बुद्धि में सहज ही स्पष्ट हो जाती हैं। *ऐसे ही मम्मा बाबा की साकार यादों का अनुभव करते करते मैं मन बुद्धि से पहुंच जाती हूँ उस स्थान पर जहां मम्मा बाबा ज्ञान योग से अपने हर ब्राह्मण बच्चे की पालना करते थे*।

➳ _ ➳ मैं देख रही हूं स्वयं को उस क्लासरूम में जहां मम्मा बाबा आ कर मुरली चलाते थे। मम्मा बाबा के ममतामई, स्नेही और मधुर महावाक्यों को सुनने के लिए अनेक ब्राह्मण आत्मायें यहां उपस्थित हैं। *सामने संदली पर ममता की साक्षात मूर्त मम्मा और प्रेम तथा वात्सलय की प्रतिमूर्ति ब्रह्मा बाबा विराजमान है। दोनों के चेहरे पर दिव्य नूर और दृष्टि में रूहानी कशिश सबको अपनी ओर आकर्षित कर रही है*। मुख से ओम ध्वनि का उच्चारण करती, सितार पर बड़ी तन्मयता के साथ दिव्य गीत गाती मम्मा की मधुर आवाज सुनने वाली हर ब्राह्मण आत्मा के हृदय के तारों को झंकारित कर रही है।

⋙ _ ⋙ ऐसा लग रहा है जैसे सभी ब्राह्मण आत्मायें देह से ऊपर उठ कर मुक्त पंछी के समान रूहानियत के आकाश में विचरण कर रही हैं। *मम्मा बाबा के मुख से मधुर वाणी सुनने के बाद अब एक एक करके सभी ब्राह्मण बच्चे मम्मा बाबा की ममतामयी गोद में बैठ अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रहें हैं*। मम्मा बाबा ज्ञान की लोरी दे कर सबको अपने वात्सलय का अनुभव करवा रहें हैं। मेरी बारी आने पर मैं जैसे ही मम्मा बाबा की गोद मे बैठती हूँ *ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे शरीर है ही नही बस थोड़ी चेतनता है किंतु अहसास नही है कि शरीर कहाँ है*। बहुत ही हल्केपन और स्वयं को असीम शक्ति से मैं भरपूर अनुभव कर रही हूं।

⋙ _ ⋙ मुरली क्लास के बाद अब मम्मा बाबा सभी बच्चों को सैर पर ले जा रहें हैं। ब्रह्मा बाबा चलते चलते बीच बीच मे खड़े हो कर बच्चों से पूछ रहे हैं:- " शिव बाबा याद है"। सभी बच्चे बारी बारी से बाबा का हाथ पकड़ कर खुशी से सैर कर रहें हैं। खुली जगह पर बैठ सभी चाय पी रहें हैं। *बीच बीच मे बाबा ज्ञान की बातें बच्चों को समझा रहें हैं और ज्ञान सुनाते सुनाते कभी अपने अनादि स्वरूप में तो कभी अपने आदि स्वरूप में स्थित होने ड्रिल भी करवा रहें हैं*। मैं देख रही हूं ड्रिल करते करते कई ब्राह्मण आत्मायें ट्रांस में पहुंच कर बाबा को श्रीकृष्ण के बाल रूप में देख गोपी बन उनके साथ रास करने में खोई हुई हैं।

⋙ _ ⋙ साकार मम्मा बाबा के साथ के इन अनमोल क्षणों का भरपूर आनन्द ले कर अब मैं ब्राह्मण आत्मा अपने सेवा स्थल पर लौट रही हूँ। *मन मे अब केवल एक ही संकल्प है मात पिता को फॉलो कर, मम्मा बाबा के समान सबकी ज्ञान योग से पालना कर सबको आप समान बनाना*। इस संकल्प को पूरा करने के लिए अब मैं अपने हर संकल्प, बोल और कर्म पर विशेष अटेंशन दे कर हर कर्म करने से पहले चेक कर रही हूं कि क्या वो मम्मा बाबा के समान है। मम्मा बाबा की शिक्षाओं को जीवन मे धारण कर सम्पूर्णता के लक्ष्य को पाने का तीव्र पुरुषार्थ करते हुए अब मैं *मम्मा बाबा के समान स्नेह और शक्तिरूप बन ईश्वरीय यज्ञ में अपने तन-मन-धन को सफल कर रही हूं*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सर्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन के निमित्त बनने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सर्व खजानों की मालिक आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सर्व शक्तियों की लाइट सदा साथ रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा माया को दूर से ही भगा देती हूँ ।*
✺ *मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सभी प्रवृत्ति में रहते, प्रवृत्ति के बन्धन से न्यारे और सदा बाप के प्यारे हो? किसी भी प्रवत्ति के बन्धन में बंधे हुए तो नहीं हो? लोकलाज के

बन्धन में, सम्बन्ध में बंधे हुए को बन्धनयुक्त आत्मा कहेंगे। तो कोई भी बन्धन न हो। मन का भी बन्धन नहीं। मन में भी यह संकल्प न आये कि हमारा कोई लौकिक सम्बन्ध है। *लौकिक सम्बन्ध में रहते अलौकिक सम्बन्ध की स्मृति रहे। निमित्त लौकिक सम्बन्ध लेकिन स्मृति में अलौकिक और पारलौकिक सम्बन्ध रहे। सदा कमल आसन पर विराजमान रहो। कभी भी पानी वा कीचड़ की बूँद स्पर्श न करे। कितनी भी आत्माओं के सम्पर्क में आते - सदा न्यारे और प्यारे रहो। सेवा के अर्थ सम्पर्क है। देह का सम्बन्ध नहीं है, सेवा का सम्बन्ध है। प्रवृत्ति में सम्बन्ध के कारण नहीं रहे हो, सेवा के कारण रहे हो। घर नहीं, सेवास्थान है।* सेवास्थान समझने से सदा सेवा की स्मृति रहेगी। अच्छा।

✺ *"ड्रिल :- प्रवृति के बन्धनों से मुक्त रहना।*"

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने कमल आसन पर विराजमान होकर अपने मस्तक पर सफेद मणि के समान चमकते हुए प्रकाश को अनुभव करती हूं... *जैसे जैसे मेरे मस्तक पर यह आत्मिक मणी जगमगाती है... वैसे वैसे मैं कमल आसन पर विराजमान आत्मा अपने चारों ओर एक सफेद प्रकाश रूपी औरे को महसूस करती हूं... मैं इस औरे में अपने आप को सुरक्षित अवस्था में अनुभव करती हूं... जैसे जैसे मैं इस अवस्था की गहराई में जाती हूं... वैसे वैसे ही मैं अपने आप को परमात्मा के और करीब महसूस करती हूं...* मैं उन्हें हर समय अपने साथ लेकर चलने का संकल्प करती हूं... और मैं अपने कर्म में आगे बढ़ने लगती हूं...

➳ _ ➳ अब मैं अपनी दिनचर्या प्रारंभ करती हूं... और हर कर्म में अपने आप को अलौकिक स्थिति में अनुभव करते हुए... और प्रवृत्ति मार्ग में रहते हुए भी मैं अपने आप को बेहद की वृत्ति में अनुभव करने का प्रयास करती हूं... और मैं अब अपने लौकिक परिवार के सभी सदस्यों को देखती हूं... और अनुभव करती हूं... कि यह सभी आत्माएं मेरे परम पिता की संतान हैं... और हम यहां पर परमात्मा द्वारा दिए गए महान कार्य को पूर्ण करने के लिए आए हैं... यह सभी आत्माएं बहुत महान और अलौकिक आत्माएं हैं... यह मेरी पूर्ण सहयोगी आत्माएं हैं... *सभी सदस्यों को मैं बेहद कि वृत्ति में अनुभव करती हूं... और ये

अनुभव करती हूं... कि यह सभी आत्माएं शांतिधाम में रहने वाली मेरी प्रिय आत्माएं हैं... इस स्थिति का अनुभव करके मैं अपने आप को हर संबंध रूपी बेडी से आजाद अनुभव करती हूं...*

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा अपने आपको बेहद की स्मृति में रखते हुए... इस लौकिक परिवार का हर कार्य निमित्त भाव से करती जा रही हूं... *मैं इस हलचल भरी दुनिया में भी अपने आप को शांति स्वरूप अवस्था में अनुभव कर रही हूं... और हर कार्य करते हुए मैं अपने आप को ऐसे व्यक्ति के रूप में अनुभव करती हूं... जैसे एक व्यक्ति फांसी पर लटका हुआ हो... अर्थात मैं अपने मन बुद्धि को परमधाम में प्रभु की याद में स्थित रखती हूं... और अपनी इस देह से सभी कर्म करती जा रही हूं...* मेरे इस स्थिति के कारण मेरे आसपास का वातावरण एकदम शांति से भरा हुआ प्रतीत हो रहा है... और मेरे आस पास रहने वाली सभी आत्माएं शांति की शक्ति का अनुभव कर रही है...

➳ _ ➳ अब मैं इस बेहद की वृत्ति को गहराई से अनुभव करते हुए... अपने आपसे यह वादा करती हूं... *कि अब मैं इस लौकिक जीवन में रहते हुए... अपने आपको सदा सभी लौकिक बंधनों से मुक्त करते हुए... उनके प्रति निमित्त भाव का अनुभव करूंगी... चाहे कैसी भी परिस्थिति हो मैं अपनी इस शांति और बेहद की वृत्ति में रहने वाली स्थिति को हलचल में नहीं आने दूंगी... और इन रिश्ते नातों रूपी बंधनों को अपने पुरुषार्थ की बेड़ी नहीं बनने दूंगी...* और अब मैं अपने आप को उसी कमल आसन पर बैठा हुआ और प्रवृत्ति मार्ग के बंधनों से मुक्त अवस्था का अनुभव करती जा रही हूं... और पुरुषार्थ की गति को और भी तीव्रता से आगे ले जा रही हूं...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔